रविवार, दिनाँक 28-01-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जो मैं हूँ वह आप हो, जो आप हो मैं भी वही हूँ

हम दोनों तो एक हैं

एक दा है प्रवेश, एक ही विशेष

अब तो रहना है जगत से निर्लेप

सजनों अभी जो आपने बोला है उस विचार पर मज़बूती से खड़े हो जाओ, क्योंकि यह ही भक्ति का सार है। अतः ख़्याल को इधर-उधर भटकाने के स्थान पर सद्-विचार पर स्थिरता से खड़ा कर लो। तभी आप अपने सच्चे घर में हर क्षण स्थिर बने रहोगे और निर्लिप्तता से जगत में विचरने के योग्य हो सकोगे। अब ध्यान से भजन सुनोः-

लगदेम प्यारे जी लगदेम प्यारे जी, रघुनाथ जी दे सांवले चरण।

सांवले चरण, डाहढे सोहणे चरण, मन मोहने चरण।।

संसार सागर विच किशती पड़ी है, कौन हुण पार उतारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

महाबीर जी दे चरणां नाल प्रीत लगाओ, ओही किशती नूं पार उतारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।

रघुनाथ जी दे चरणां दे हैन प्यारे, नाले आँखों के हैन ओ तारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

मैं दासी बली बली पुकारां, ओ त्रिलोकी दे हैन सहारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

कंधे हीरियाँ वाली गदा साजे, हथ विच चरण प्यारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

हथ धनुष मस्तक तिलक बिराजे, सारी दुनियां दे हैन सहारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

मन मोह लिया सांवली सूरत ने, सारी दुनियां दे चमकारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

राज अटल तुआडा सदा ही राहवे, दासी हथ जोड़ अर्ज़ गुजारे जी।

रघुनाथ जी दे सांवले चरण, लगदेम प्यारे जी।।

इस भजन के तहत् परोपकार प्रवृत्ति सच्चेपातशाह जी जगतवासियों को आत्म-स्मृति में आने के प्रति आवाहन देते हुए कहते हैं कि हे सजनों ! समझदारी में आओ और आत्म-विचार प्राप्त करने हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के चरणों में सदा समर्पित रहो। कहने का तात्पर्य यह है कि उन द्वारा जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित जीवन शैली है, उस पावन जीवन-शैली को अपनाकर अपनी जीवन यात्रा पाप रहित बना लो फिर कह रहे है कि इधर-उधर मत भटको क्योंकि ख़्याल के इधर-उधर भटकने पर आप स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन जीने के योग्य नहीं बन सकते। आज का मानव यही भूल कर बैठा है इसलिए तो जगत में लिप्त हो बुरी दशा को प्राप्त हो चुका है। इस संदर्भ में जानो कि अगर जीवन के मार्ग-दर्शक का चयन बुद्धिमत्ता व विवेकशीलता से किया जाता है तो इन्सान अपने लक्ष्य को सहज ही प्राप्त करने में सफल हो जाता है। इसके विपरीत स्थिति में उसका जीवन दुर्दशा को प्राप्त हो जाता है। सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते अब आगे से यह भूल किसी से भी न हो इस हेतु सजना सम्भल जाओ और सुधर जाओ। जानो आत्मसुधार ही आत्मोद्धार का हेतु है। यहाँ ज्ञात हो कि जब तक आप जगतीय आसक्ति व उस के कारण उत्पन्न 'मैं-मेरी' की कलुषित विचारधारा से ऊपर उठ, ऐक्य भाव मे स्थिर रहने का पराक्रम नहीं दिखाओगे तब तक आपका मन संकल्प-विकल्प के चक्रव्यूह

में उलझा रहेगा और आप कदापि आत्म-स्मृति में नहीं आ सकोगे। आप मानोगे कि इसी जगतीय लगाव के कारण ही, आप मनुराज से ऊपर उठने में सक्षम नहीं हो पा रहे। इससे सीधा पता चलता है कि अभी तक आपने अपने यथार्थ को पहचाना ही नहीं अपितु अपने शरीर को ही अपना यथार्थ मानकर नश्वरता के साथ जुड़े पड़े हो। जानो नश्वरता का भाव जब मन में घर कर जाता है तो हर वक्त मौत का भय सताता है। ऐसा होने पर जो चतुर इन्सान होते हैं वह दूसरे इन्सानों को अपने प्रभुत्व में लेकर व भय दिखाकर शास्त्र-विपरीत चलन अपनाने पर व उस पर चलने पर मजबूर कर देते हैं। फिर धीरे-धीरे यही चलन उनकी आदत बन जाती है। आदत बन गई यानि पक्की हो गई तो उसको छोड़ना कठिन प्रतीत होता है यानि फिर इन्सान उसे छोड़ने में अपने आप को असमर्थ पाता है। यही आपके साथ हुआ पड़ा है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में सुगम सद्‌मार्ग उपलब्ध होने के बावजूद भी आप विपरीत चलन छोड़ नहीं पा रहे। सजनों यदि उसमें विदित विचारों अनुरूप खुद को साध लो तो आपको अपनी यथार्थता का परिचय स्वयंमेव मिल जाएगा और आप आत्मीयता के भाव-स्वभाव अपनाकर मानवता के स्वाभिमान और सतयुग की पहचान बन जाओगे। बस, फिर मस्तिष्क शान्त रहेगा। जानो जहाँ शान्ति है वहाँ मानसिक स्थिरता है और जहाँ मानसिक स्थिरता है वहाँ दर्शन समक्ष है। अतः इस महत्ता के दृष्टिगत आप इस बात को समझने का प्रयास करो। इधर से बात सुनकर उधर से निकाल मत दिया करो अपितु उसका प्रयोगात्मक ढँग सीखो, तभी सफलता को प्राप्त कर सकोगे यानि फ़र्स्ट का नतीजा सुना सकोगे। इस संदर्भ में ज्ञात हो जो आनन्द प्रभु की गोदी का है, वह कहीं से भी प्राप्त नहीं हो सकता। अतः अब इसी विषय पर ध्यान से कीर्तन सुनोः-

तूं आप सजना ओ, त्रिलोकी दा सिंगारिया।

मिथ्या घर विसारिया, अपना आप संवारिया।।

त्रिलोकी दा सिंगारिया, त्रिलोकी दा सिंगारिया।

तूं आप सजना ओ, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

सुखां दा है दाता तूं, सुखां दी है पदवी।

सुखां दा साज बना लिया, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

सिंघासन तेरा तूं, सिंघासन दा मालिक।

कई सूरजां दा सूरज चढ़ा लिया, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

जगमग जगमग, त्रिलोकी दा तू चानणा।

चिराग़ तेरा ही नज़र आ रिहा, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

विश्व तेरी तूं सारी विश्व दा मालिक।

अचरज ठाठ रचा लिया, त्रिलोकी दा सिंगारिया।।

सजनों सच्चेपातशाह जी कलुकाल के पथ-भ्रष्ट इन्सानों को पुनः सत्य पथ जनाने हेतु बड़े सहज व सरल शब्दों में कह रहे हैं कि हे सजनों ! मानो कि आप यथार्थतः त्रिलोकी यानि तीनों लोकों का श्रृंगार हो। अतः सदा अपने आत्म-स्वरूप में सदा स्थित रहो ताकि त्रिलोकी आपका श्रृंगारित स्वरूप देखकर हर्षा उठे। जानो अपने श्रृंगारित स्वरूप में स्थित रहना कर्त्तव्यपरायणता की बात होती है। अतः उसके लिए चाहे कुछ भी कुर्बान करना पड़े, उसे त्यागने में संकोच नहीं होना चाहिए। उपरोक्त कीर्तन के परिप्रेक्ष्य में सजनों जब कहा जाता है कि 'त्रिलोकी तेरी तूं त्रिलोकी दा चानणा', तो इस से आशय होता है कि त्रिलोकी को सदा ज्ञानमय अवस्था में स्थिरता से बनाये रखो। यहाँ ज्ञानमय से आशय उसे - प्रकाशित अवस्था में साधे रखने से है ताकि जीवन का सत्य हर क्षण प्रकाशित रहे। इस हेतु उसके प्रति निपुण बनना आवश्यक है। जानो सजनों यह बहुत उच्च पदवी है। अतः इस पदवी को प्राप्त करन हेतु अपने ख़्याल को ध्यानपूर्वक अपने सच्चे घर में स्थिर रखना अनिवार्य है। इसके विपरीत कामयुक्त होकर विचरना यानि दुनियाँ से प्राप्ति की अपेक्षा रखना अपनी पद गरिमा से गिरने की बात है। यहाँ अप ही बताओ कि क्या गिरा हुआ इन्सान कहीं से आदर प्राप्त कर सकता है?

मौन।

क्या इतने ऊँचे पद से गिरना समझदारी की बात है?

मौन।

इस परिप्रेक्ष्य में जानो जिस किसी से भी यह भूल होती है, उसका सीधा अर्थ होता है कि उसने अपने जीवन के अनमोल मानव चोले की महत्ता को जाना ही नहीं यानि इस सत्य

को पहचाना ही नहीं कि कुदरत ने यह मानव चोले रूपी बनत उसे क्योंकर बख़्शी है। इस संदर्भ में सजनों कुदरत की इतनी बड़ी रहमत हर मानव को प्रवान करनी चाहिए। अब वह प्रवानगी सही मायने में कैसे होती है? - उसके लिए मानव को कुदरती वाणी अनुरूप अपने भाव-स्वभाव को ढालकर, जीवन की हर परिस्थिति में अपन ख़्याल-ध्यान को आत्मस्वरूप में परिपक्वता से साधे रखना होता है। सजनों यह होता है - मनमत से बचे रह अपनी यथार्थ अवस्था में बने रहना जो कि सर्वोच्च अवस्था है। इस विषय में जो भी मानव इस चलन के विपरीत चलता है उसकी बुद्धि मनुराज में गिर जाती है और उसे हर क्षण दुर्दशा का सामना करना पड़ता है। इतना होने पर भी इन्सान मानता नहीं, रोता है, झुखता है और इसी में उम्र व्यतीत कर अपना जीवन बर्बाद कर देता है। यही नहीं ऐसा करके वह खुद तो डूबता ही डूबता है यानि अधोगति को प्राप्त होता ही होता है, साथ ही साथ जो अन्य जीव उसके साथ जुड़ हुए होते हैं उनका भी नाश कर देता है।

यहाँ विचारने की बात यह है कि ईश्वर के हुकम अनुसार कहाँ तो उसे सकामता का वातावरण बनाना था और कहाँ कामनायुक्त अधर्म का रास्ता अपनाकर वह अपने जीवन में इतने अधिक पाप कर बैठता है कि फिर अचेत होकर पड़ा रहता है। उसकी यही हालत देखकर सजनों शास्त्र उसे आवाज़ें लगा रहा है कि उठ, उठ और जागृति में आकर अपने स्वरूप को पा जा। पर अब उस टूटे हुए इन्सान में हिम्मत ही नहीं रही। आशय यह है कि कहाँ तो कुदरत ने इन्सान को ओजस्वी और तेजस्वी बनाया लेकिन अब कलुकाल के प्रभाव से उसमें न ओज रहा न तेज अपितु उसे तो सर्वत्र अन्धकार ही अन्धकार नजर आ रहा है। तभी तो जब भी आत्मोद्धार हेतु कोई क्रिया करने को कहा जाये तो वैसा करने में वह स्वयं को असक्षम पाता है और मनुराज से अपने ख़्याल को ऊपर उठाने में कमज़ोर बना रहता है। सजनों जब मनुराज से ऊपर ही नहीं उठेगा तो वह ज्ञानेन्द्रियों का टप्पा मारकर अपने स्थान को कैसे पायेगा? फिर तो ज्ञानेद्रियाँ जो भी देखेंगी, वह उस तरफ लालायित होता रहेगा और हर क्षण उसी को प्राप्त करने की सोचता रहेगा। परिणामतः वह कामी, क्रोधी व लोभी बन जायेगा और उसे मोह सतायेगा जिसक परिणामस्वरूप वह अहंकार यानि 'मैं' प्रवृत्ति में उलझ जायेगा। सजनों जानो 'मैं' तो मरण है। जैसे ही 'मैं' घर करती है तो मौत आवाज़ें मारती है - आजा, आजा, आजा। सजनों यह आवाज़ें सुनकर भी जब इन्सान नहीं सम्भलता तो वह जीवन जीने के योग्य ही नहीं रहता।

इस सन्दर्भ में इस द्वारे का कोई भी सजन इस दुर्दशा को प्राप्त न हो इसीलिए बार-बार समझाने का नियम कुदरत ने रखा है ताकि शायद आज नहीं तो शायद कल इंसान की बुद्धि टिकाणे आ जाये और वह सुमति में आ, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का चिन्तन-मनन करते हुए आत्म-स्मृति में आ जाये। जब आत्म-स्मृति में आ गया तो सजनों मानव चोले का पूर्ण लाभ उठा मोक्ष को पाना व जीवन सफल बनाना सहज हो जाता है। अतः सजनों मानो कि यह मौका बार-बार नहीं मिलता। इसलिए अपना जीवन बर्बाद मत करो और ध्यान से सुनोः-

धन रघुवर प्यारे दी गोदी दिखाई बलधारी ओए।

धन रघुवर प्यारा तेरी गोदी दिखाई बलधारी ओए।।

लगदीम प्यारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

जेहड़ा रघुवर प्यारे दी गोदी विच आवे, जन्म अपना ओ सफल बनावे।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

अवतार धार राधिका नूं खिडायो, खेडी ए जनक दुलारी ओए।।

धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

रघुवर जी दी गोदी विच प्रहलाद जी खेडे।।

खेडे ध्रुव जगत हितकारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

रघुवर जी दी गोदी विच महाबीर जी खेडे।

खेडे लक्ष्मण ब्रह्मचारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

लक्ष्मण खेडे भरत जी वी खेडे।

खेडे शत्रुघ्न शत्रुनाश कारी ओये, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

रघुवर जी दी गोदी हिवे सब दी ओ सांझी।

खेडे सृष्टि सारी ओये, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जुड़ा हुआ हर सजन आत्मोद्धार करने के योग्य बन सके, उसके लिए कितनी मेहनत होती है। तो अगर हम इतनी सुन्दर व्यवस्था मिलने के बावजूद भी अपने ख़्याल को दुनियाँ में उलझाये रखने के प्रति ढीठ बने रहे तो कोई क्या कर सकता है? यह जानते हुए भी कि अन्ततः ऐसा करने से यानि दुनियां में उलझे रहने से हमारा ही बुरा होना है, हम समय रहते ही इस बुराई से छुटकारा पाने के लिए प्रयास क्यों नहीं करते?

मौन

सजनों आप मानोगे कि दुनियां में उलझे रहने के कारण ही आज का मानव बुरा सोचता है, बोलता है और बुरा करने में ही दिलचस्पी रखता है। यहाँ तक कि ऐसा करते समय मानव यह भी भूल जाता है कि स्वार्थपरता में उलझ छल-कपट का व्यवहार करना गुनाह है। यह गुनाह करते हुए यानि छल-कपट में प्रवृत्त होने के बावजूद भी इंसान अपने आप को बहुत समझदार समझता है क्योंकि वह दूसरों को मूर्ख बनाकर उन्हें लूटने में निपुण होता है। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जब आप लुटते हो तो रोते हो और जब दूसरों को लूटते हो तो अन्दर से बड़ा गर्व महसूस करते है। तब यह क्यों नहीं याद रखते कि कोई और देखे या न देखे पर सर्वव्यापक ईश्वर तो देख रहा है और बूझ रहा है कि आप किस प्रकार का राजसिक, तामसिक या फिर सात्विक कर्म कर रहे हो? अतः सजनों ध्यान से सुनों कि अन्यों के साथ धोखा करना अपने साथ धोखा करने की बात होती है यानि यह हक़ीकत में अपने साथ धोखा हो रहा होता है क्योंकि हमारा स्वाभाविक स्वरूप बिगड़ रहा होता है। ऐसा होने पर हम इन्सानियत से गिरकर हैवानियत में ढल जाते हैं। तभी तो हम आँखें होते हुए भी सत्य को परख नहीं पाते क्योंकि तब हमारी विवेकशक्ति ही क्षीण हो जाती है। सो सजनों ऐसा मत करो जी। इसके स्थान पर अपने पर कृपा करो यानि अपने सजन आप बनकर समय रहते ही अपना जीवन सँवार लो।

आप अपना जीवन सँवारने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।

नोटः- सजनों ज्ञात हो कि दिनाँक **25** फरवरी **2024** से शाम का पाँच से साढे पाँच व साढे पाँच से छः बजे के मध्य किए जाने वाले पौने दो महीने के पाठ का शुभारम्भ होने जा रहा है। इसी तरह अखण्ड हवन **27** फरवरी को होना है।